IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रामचरित मानस के राम की मानवीय व्यवहार की समसामयिकता: एक प्रोक्ति विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोधार्थी

अन्जू श्रीवास्तव

मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल शिक्षा विभाग, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर।

सह निर्देशक

डॉ. प्रशांशु

दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश :–

इस शोधपत्र में रामचरितमानस में वर्णित श्रीराम के मानवीय व्यवहार की समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है। तुलसीदास द्वारा रचित यह महाकाव्य न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक, नैतिक एवं राजनीतिक पहलुओं को भी उजागर करता है। श्रीराम को एक आज्ञाकारी पुत्र, निस्वार्थ भाई, आदर्श पति, न्यायप्रिय राजा और संवेदनशील मित्र के रूप में चित्रित किया गया है। उनके कार्यों में कर्तव्यपरायणता, त्याग, करुणा और सामाजिक समरसता के मूल्य प्रतिबिंबित होते हैं। शोध में श्रीराम के विभिन्न रिश्तों और उनकी भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। उनके पुत्र, भाई, पति, और राजा के रूप में निभाई गई भूमिकाएँ आधुनिक समाज में नैतिक नेतृत्व और मानवीय मूल्यों की प्रेरणा प्रदान करती हैं। शोध के अंतर्गत यह भी विश्लेषण किया गया है कि कैसे श्रीराम का चरित्र पारिवारिक संबंधों की सुदृढ़ता, सामाजिक सौहार्द्र और नीतिगत शासन के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है। आज के समय में, जब पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन देखा जा रहा है, श्रीराम का चरित्र अनुकरणीय बन जाता है। उनकी नेतृत्व शैली, न्यायिक निर्णय, तथा जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण आधुनिक प्रशासन, पारिवारिक संतुलन और सामाजिक न्याय के लिए प्रेरणादायक हैं।

मुख शब्द :–

रामचरितमानस, तुलसीदास, आदर्श नेतृत्व, सामाजिक समरसता, नैतिक मूल्य, राजनीतिक दृष्टिकोण, कर्तव्यपरायणता, पारिवारिक संबंध, न्यायिक प्रणाली, आधुनिक प्रासंगिकता।

1. परिचय

रामचरित मानस गोस्वामी तुलसीदास द्वारा 16वीं शताब्दी में रचित एक महाकाव्य है, जिसे हिंदी साहित्य का सर्वोच्च ग्रंथ माना जाता है। यह वाल्मीकि रामायण पर आधारित है, परंतु तुलसीदास ने अपनी प्रतिभा और अनुभव के आधार पर इसे अपनी विशिष्ट शैली और भाषा में प्रस्तुत किया है। रामचरित मानस अवधी भाषा में रचित है और इसमें सात कांड हैं – बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड और उत्तरकांड।

रामचरित मानस केवल राम के जीवन की कथा ही नहीं, बल्कि एक दार्शनिक और आध्यात्मिक ग्रंथ भी है, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास ने इस ग्रंथ में भक्ति, ज्ञान, कर्म, धर्म, नीति, राजनीति, समाज, परिवार, संबंध और मानवीय मूल्यों पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। रामचरित मानस में राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किया गया है, जो दैवीय शक्तियों से संपन्न होते हुए भी मानवीय मूल्यों और मर्यादाओं का पालन करते हैं। तुलसीदास ने राम के चरित्र को विभिन्न संबंधों और भूमिकाओं में चित्रित किया है – एक आज्ञाकारी पुत्र, स्नेही भाई, प्रेमी पति, विश्वासपात्र मित्र और न्यायप्रिय राजा के रूप में। राम के इन विभिन्न रूपों में उनका मानवीय व्यवहार, उनकी संवेदनाएँ, उनके संघर्ष और उनके द्वारा लिए गए निर्णय उनके चरित्र की गहराई और विविधता को दर्शाते हैं। रामचरित मानस में वर्णित राम का चरित्र एक आदर्श है, परंतु यह आदर्श अवास्तविक या अप्राप्य नहीं है। तुलसीदास ने राम के चरित्र को इस प्रकार चित्रित किया है कि वह हर मनुष्य के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन सके। राम के चरित्र की यही विशेषता उन्हें आज भी प्रासंगिक बनाती है।

वर्तमान समय में जहां मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है, जहां अहंकार, स्वार्थपरता और भौतिकवाद ने मनुष्य के जीवन को प्रभावित किया है, ऐसे में राम के चरित्र की प्रासंगिकता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। रामचरित मानस में वर्णित राम के व्यवहार, उनके संवाद, उनकी प्रतिक्रियाएँ और उनके द्वारा लिए गए निर्णय आज भी हमारे जीवन के लिए मार्गदर्शक हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में रामचरित मानस में वर्णित राम के मानवीय व्यवहार की समसामयिकता का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में राम के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं – एक पुत्र, भाई, पति, मित्र, राजा और आध्यात्मिक नेता के रूप में उनके व्यवहार का विश्लेषण किया गया है और यह समझने का प्रयास किया गया है कि आज के संदर्भ में उनके ये व्यवहार किस प्रकार प्रासंगिक हैं।

2. अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- रामचरित मानस में वर्णित राम के मानवीय व्यवहार का विश्लेषण करना।
- राम के विभिन्न संबंधों में उनके व्यवहार और संवादों का अध्ययन करना।
- राम के व्यवहार की वर्तमान समय में प्रासंगिकता का आकलन करना।
- राम के चरित्र से प्राप्त मूल्यों और शिक्षाओं का वर्तमान संदर्भ में मूल्यांकन करना।

3. शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में प्रोक्ति विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया है। प्रोक्ति विश्लेषण एक ऐसी अनुसंधान पद्धति है जिसके माध्यम से भाषा, संवाद, वक्तव्य और पाठ का गहन अध्ययन किया जाता है। इस पद्धति के अंतर्गत न केवल शब्दों और वाक्यों का अर्थ समझा जाता है, बल्कि उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों का भी अध्ययन किया जाता है। रामचरित मानस में वर्णित राम के संवादों, उनकी वाणी, उनके द्वारा प्रयुक्त शब्दों, उनके द्वारा व्यक्त किए गए विचारों और भावों का विस्तृत अध्ययन इस पद्धति के माध्यम से किया गया है। इस शोध पत्र में प्राथमिक स्रोत के रूप में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस का उपयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त, द्वितीयक स्रोतों के रूप में रामचरित मानस पर लिखे गए विभिन्न विद्वानों के शोध पत्र, पुस्तकें और आलोचनात्मक समीक्षाएँ शामिल की गई हैं।

4. राम का पुत्र रूप :– आज्ञापालन और समर्पण

रामचरित मानस में राम को एक आदर्श पुत्र के रूप में चित्रित किया गया है, जो अपने माता–पिता के प्रति अत्यंत आदर और समर्पण भाव रखते हैं। उनका पुत्र रूप उनके चरित्र का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो आज के समय में युवाओं के लिए अनुकरणीय है। राम के पुत्र रूप की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उनका आज्ञापालन है। जब राजा दशरथ पितृ सत्य निभाने के लिए राम को चौदह वर्षों के लिए वनवास देने का निर्णय सुनाते हैं, तो राम बिना किसी प्रश्न या विरोध के इस आज्ञा को स्वीकार कर लेते हैं। उनका यह व्यवहार उनके पिता के प्रति उनके गहरे सम्मान और समर्पण को दर्शाता है। वह क्षण जब राम को वनवास का आदेश मिलता है, रामचरित मानस में अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है :–

पितु आयस भूषन बसन तात तजे रघुबीर।

बिसमउ हरषु न हृदयँ कछु पहिरे बलकल चीर ॥165॥[1]

इस दोहे में कहा गया है कि पिता की आज्ञा से श्रीराम ने अपने सुंदर वस्त्र और आभूषण त्याग दिए। लेकिन यह देखकर न तो उन्हें कोई आश्चर्य हुआ, न ही कोई दुख। वे प्रसन्न मन से केवल वाल्कल (वनवासी वस्त्र) धारण कर लेते हैं। उनके हृदय में न कुछ विषाद था, न हर्ष।यह दोहा राम के पिता के प्रति समर्पण और धर्म के प्रति उनकी निष्ठा को दर्शाता है। राम के इस व्यवहार में कई मानवीय गुण दृष्टिगोचर होते हैं – आज्ञापालन, समर्पण, त्याग, धैर्य और संयम। वे अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हैं, चाहे वह कितनी ही कठिन क्यों न हो। उनका यह व्यवहार आज के समय में जहाँ पारिवारिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, अत्यंत प्रासंगिक है।

[1] तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अयोध्याकांड 165), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204

अयोध्याकांड में एक अन्य प्रसंग में, जब कैकेयी राम को वनवास का आदेश सुनाती हैं, राम का व्यवहार उनके पुत्र रूप की अद्भुत झलक प्रस्तुत करता है :–

मोहि कहु मातु तात दुख कारन। करिअ जतन जेहिं होइ निवारन॥

सुनहु राम सबु कारनु एहू। राजहि तुम्ह पर बहुत सनेहू॥3॥

देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना। मागेउँ जो कछु मोहि सोहाना॥

सो सुनि भयउ भूप उर सोचू। छाड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू॥4॥

सुत सनेहु इत बचनु उत संकट परेउ नरेसु।

सकहु त आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेसु॥40॥[2]

सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी॥

तनय मातु पितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा॥4॥

इस प्रसंग में राम ने कैकेयी से अपने पिता द्वारा दिए गए वनवास के आदेश को सुना, और वे न तो क्रोधित हुए और न ही दुखी। उन्होंने इसे अपने पिता की आज्ञा और अपना धर्म मानकर स्वीकार कर लिया। उनका यह व्यवहार उनके असाधारण संयम और धैर्य को दर्शाता है। राम का पुत्र रूप केवल उनके पिता के प्रति ही नहीं, बल्कि माता कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी के प्रति भी समान रूप से प्रकट होता है। वे अपनी सभी माताओं का समान रूप से आदर और सम्मान करते हैं, और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं। जब वे वनवास जाने से पूर्व अपनी माताओं से आशीर्वाद लेने जाते हैं, तब भी उनका व्यवहार माताओं के प्रति अत्यंत आदरपूर्ण और स्नेहपूर्ण रहता है। आज के समय में जब पारिवारिक संबंधों में दरारें आ रही हैं, जब माता–पिता और संतानों के बीच संवाद की कमी और भावनात्मक दूरी बढ़ रही है, राम का पुत्र रूप एक आदर्श प्रस्तुत करता है। उनका आज्ञापालन, समर्पण, आदर और स्नेह आज की पीढ़ी के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश देता है। वर्तमान समय में जब व्यक्तिगत स्वतंत्रता और व्यक्तिवाद पर अधिक जोर दिया जा रहा है, राम का पुत्र रूप हमें पारिवारिक मूल्यों, माता–पिता के प्रति कर्तव्य और समर्पण के महत्व की याद दिलाता है।

प्रोक्ति विश्लेषण के दृष्टिकोण से देखें तो राम के संवादों में उनके पुत्र रूप की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। उनके संवादों में विनम्रता, आदर, समर्पण और स्नेह का भाव प्रमुख है। वे अपने माता–पिता से संवाद करते समय हमेशा विनम्र और आदरपूर्ण भाषा का प्रयोग करते हैं, और उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करते हैं। इस प्रकार, राम का पुत्र रूप आज के समय में एक आदर्श प्रस्तुत करता है, जो युवाओं को अपने माता–पिता के प्रति उनके कर्तव्यों, उनके आदर और सम्मान के महत्व को समझाता है। राम का पुत्र रूप हमें सिखाता है कि परिवार हमारे जीवन की नींव है, और माता–पिता के प्रति आदर और समर्पण हमारे जीवन को सार्थक बनाता है।

[2] तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अयोध्याकांड, श्री राम–कैकेयी संवाद), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204

5. राम का भ्रातृ रूप :– स्नेह और त्याग

रामचरित मानस में राम को एक आदर्श भाई के रूप में भी चित्रित किया गया है, जो अपने भाइयों के प्रति अगाध स्नेह और त्याग का भाव रखते हैं। राम का भ्रातृ रूप उनके चरित्र का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो आज के समय में भाई–बहनों के बीच के संबंधों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है। राम और लक्ष्मण के बीच का संबंध रामचरित मानस में अत्यंत गहराई से चित्रित किया गया है। राम के वनवास पर जाने पर लक्ष्मण भी उनके साथ जाने का निर्णय लेते हैं, और इस प्रसंग में राम का व्यवहार उनके भ्रातृ स्नेह को दर्शाता है :–

अस जियँ जानि सुनहु सिख भाई। करहु मातु पितु पद सेवकाई॥

भवन भरतु रिपुसूदनु नाहीं। राउ बृद्ध मम दुखु मन माहीं॥1॥

मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा। होइ सबहि बिधि अवध अनाथा॥

गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू॥2॥

रहहु करहु सब कर परितोषू। नतरु तात होइहि बड़ दोषू॥

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृपु अवसि नरक अधिकारी॥3॥

रहहु तात असि नीति बिचारी। सुनत लखनु भए ब्याकुल भारी॥

सिअरें बचन सूखि गए कैसें। परसत तुहिन तामरसु जैसें॥4॥[3]

इस प्रसंग में राम लक्ष्मण को समझाते हैं कि वे चिंता न करें और अपने मन को विचलित न होने दें। उनके शब्दों में स्नेह और करुणा है, और वे लक्ष्मण को धैर्य और साहस के साथ परिस्थितियों का सामना करने के लिए प्रेरित करते हैं। राम के इस व्यवहार में उनका बड़े भाई होने का उत्तरदायित्व और स्नेह दोनों दिखाई देते हैं। रामचरित मानस में राम और भरत के बीच का संबंध भी अत्यंत गहराई से चित्रित किया गया है। जब भरत को अपने पिता की मृत्यु और राम के वनवास के बारे में पता चलता है, वे अत्यंत दुखी होते हैं और राम को वापस लाने के लिए वन जाते हैं। इस प्रसंग में राम का व्यवहार उनके भ्रातृ स्नेह और त्याग को दर्शाता है :–

प्रभु पद पदुम पराग दोहाई। सत्य सुकृत सुख सीवँ सुहाई॥

सो करि कहउँ हिए अपने की। रुचि जागत सोवत सपने की॥1॥

सहज सनेहँ स्वामि सेवकाई। स्वारथ छल फल चारि बिहाई॥

अग्यासम न सुसाहिब सेवा। सो प्रसादु जन पावै देवा।2॥

अस कहि प्रेम बिबस भए भारी। पुलक सरीर बिलोचन बारी॥

[3] तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अयोध्याकांड, श्री राम–भरत संवाद), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204

प्रभु पद कमल गहे अकुलाई। समउ सनेहु न सो कहि जाई॥3॥

कृपासिंधु सनमानि सुबानी। बैठाए समीप गहि पानी॥

भरत बिनय सुनिदेखि सुभाऊ। सिथिल सनेहँ सभा रघुराऊ॥4॥[4]

इस प्रसंग में राम भरत के प्रति अपने स्नेह और प्रेम को व्यक्त करते हैं, और भरत को समझाते हैं कि उन्हें अयोध्या वापस जाकर राज्य का भार संभालना चाहिए। राम भरत के प्रति अपने स्नेह के कारण उनके दुख को समझते हैं, परंतु वे उन्हें धर्म और कर्तव्य का पालन करने के लिए प्रेरित करते हैं। इस मिलन में दोनों भाइयों के बीच का स्नेह और प्रेम स्पष्ट दिखाई देता है। राम भरत के दुख को समझते हैं और उन्हें सांत्वना देते हैं। राम का भ्रातृ रूप केवल उनके भाइयों के प्रति ही नहीं, बल्कि सुग्रीव जैसे मित्रों के प्रति भी प्रकट होता है, जिन्हें वे भाई के समान मानते हैं। सुग्रीव के साथ उनका संबंध भ्रातृत्व और मित्रता का अद्भुत मिश्रण है। आज के समय में जब भाई–बहनों के बीच के संबंधों में दरारें आ रही हैं, जब संपत्ति और अन्य भौतिक कारणों से भाई–बहनों के बीच संघर्ष और विवाद बढ़ रहे हैं, राम का भ्रातृ रूप एक आदर्श प्रस्तुत करता है। उनका स्नेह, त्याग, सहयोग और समझ आज की पीढ़ी के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश देती है। प्रोक्ति विश्लेषण के दृष्टिकोण से देखें तो राम के संवादों में उनके भ्रातृ रूप की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। उनके संवादों में स्नेह, करुणा, समझ और मार्गदर्शन का भाव प्रमुख है। वे अपने भाइयों से संवाद करते समय उनके दुख और चिंताओं को समझते हैं, और उन्हें धैर्य और साहस के साथ परिस्थितियों का सामना करने के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रकार, राम का भ्रातृ रूप आज के समय में एक आदर्श प्रस्तुत करता है, जो हमें भाई–बहनों के बीच के संबंधों के महत्व, उनके प्रति स्नेह, त्याग और समझ का संदेश देता है। राम का भ्रातृ रूप हमें सिखाता है कि परिवार में भाई–बहनों के बीच का स्नेह और सहयोग परिवार की एकता और सौहार्द का आधार है।

6. राम का पति रूप :– समर्पण और संवेदनशीलता

रामचरित मानस में राम को एक आदर्श पति के रूप में भी चित्रित किया गया है, जो अपनी पत्नी सीता के प्रति अत्यंत समर्पित और संवेदनशील हैं। राम का पति रूप उनके चरित्र का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो आज के समय में दांपत्य संबंधों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है। राम और सीता के बीच का संबंध रामचरित मानस में अत्यंत गहराई और संवेदनशीलता से चित्रित किया गया है। उनका प्रेम समपर्ण, विश्वास और पारस्परिक सम्मान पर आधारित है। जब राम वनवास के लिए जाने की तैयारी करते हैं, तब सीता भी उनके साथ जाने का निर्णय लेती हैं। इस प्रसंग में राम का व्यवहार उनके पति रूप की एक झलक प्रस्तुत करता है :–

खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल।

नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल॥65॥

बनदेबीं बनदेव उदारा। करिहहिं सासु ससुर सम सारा॥

[4] तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अयोध्याकांड, श्री सीता–राम संवाद), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204

कुस किसलय साथरी सुहाई। प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई॥1॥

कंद मूल फल अमिअ अहारू। अवध सौध सत सरिस पहारू॥

छिनु–छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी। रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी॥2॥

बन दुख नाथ कहे बहुतेरे। भय बिषाद परिताप घनेरे॥

प्रभु बियोग लवलेस समाना। सब मिलि होहिं न कृपानिधाना॥3॥

अस जियँ जानि सुजान सिरोमनि। लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि॥

बिनती बहुत करौं का स्वामी। करुनामय उर अंतरजामी॥4॥

राखिअ अवध जो अवधि लगि रहत न जनिअहिं प्रान।

दीनबंधु सुंदर सुखद सील सनेह निधान॥66॥[5]

इस प्रसंग में सीता राम से वन में साथ चलने की अनुमति माँगती हैं, और कहती हैं कि जिस प्रकार छाया शरीर का साथ नहीं छोड़ती, उसी प्रकार वे भी राम का साथ नहीं छोड़ेंगी। राम प्रारंभ में सीता को वन की कठिनाइयों से अवगत कराते हुए उन्हें अयोध्या में ही रहने का परामर्श देते हैं, परंतु सीता के दृढ़ निश्चय को देखकर वे उन्हें अपने साथ ले जाने का निर्णय लेते हैं। राम का यह व्यवहार उनकी संवेदनशीलता और सीता की इच्छाओं और भावनाओं के प्रति उनके सम्मान को दर्शाता है। वे सीता को वन की कठिनाइयों से बचाना चाहते हैं, परंतु साथ ही वे उनके निर्णय का सम्मान भी करते हैं। यह आधुनिक दांपत्य जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है, जहां पति–पत्नी के बीच परस्पर सम्मान और समझ अत्यंत महत्वपूर्ण है। वनवास के दौरान राम और सीता के बीच का संबंध और भी गहरा हो जाता है। वे एक–दूसरे के साथ कठिनाइयों का सामना करते हैं और एक–दूसरे को सहारा देते हैं। राम सीता की देखभाल और सुरक्षा के प्रति अत्यंत सजग रहते हैं, और सीता भी राम के प्रति अपने समर्पण और स्नेह को बनाए रखती हैं। सीता–हरण के बाद राम का विरह और शोक उनके पति रूप की एक अन्य झलक प्रस्तुत करता है :–

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी॥

खंजन सुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रबीना॥5॥

कुंद कली दाड़िम दामिनी। कमल सरद ससि अहिभामिनी॥

बरुन पास मनोज धनु हंसा। गज केहरि निज सुनत प्रसंसा॥6॥

श्री फल कनक कदलि हरषाहीं। नेकु न संक सकुच मन माहीं॥

[5] तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अयोध्याकांड, श्री सीता–राम संवाद), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204

सुनु जानकी तोहि बिनु आजू। हरषे सकल पाइ जनु राजू॥7॥

किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं। प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं॥

एहि बिधि खोजत बिलपत स्वामी। मनहुँ महा बिरही अति कामी॥8॥

पूरकनाम राम सुख रासी। मनुजचरित कर अज अबिनासी॥

आगें परा गीधपति देखा। सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा॥9॥[6]

इस प्रसंग में राम सीता के वियोग में अत्यंत व्यथित हैं और उनके बिना जीवन को निरर्थक मानते हैं। उनका यह व्यवहार उनके पति रूप की गहराई और उनके प्रेम की तीव्रता को दर्शाता है। वे सीता को खोजने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं और अंततः उन्हें प्राप्त करने में सफल होते हैं। राम के पति रूप का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है उनका सीता के प्रति विश्वास और सम्मान। वे सीता की पवित्रता और चरित्र पर पूर्ण विश्वास रखते हैं, और उनके हृदय में सीता के प्रति अटूट श्रद्धा है। आज के समय में जब दांपत्य संबंधों में दरारें आ रही हैं, जब पति–पत्नी के बीच विश्वास, सम्मान और समझ की कमी हो रही है, राम का पति रूप एक आदर्श प्रस्तुत करता है। उनका प्रेम, समर्पण, विश्वास, सम्मान और संवेदनशीलता आज की पीढ़ी के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश देते हैं। प्रोक्ति विश्लेषण के दृष्टिकोण से देखें तो राम के संवादों में उनके पति रूप की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। उनके संवादों में प्रेम, समर्पण, विश्वास और संवेदनशीलता का भाव प्रमुख है। वे सीता से संवाद करते समय उनकी भावनाओं और इच्छाओं का सम्मान करते हैं, और उन्हें अपने जीवन का अभिन्न अंग मानते हैं। इस प्रकार, राम का पति रूप आज के समय में दांपत्य संबंधों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है, जो पति–पत्नी के बीच प्रेम, समर्पण, विश्वास, सम्मान और संवेदनशीलता के महत्व को दर्शाता है। राम का पति रूप हमें सिखाता है कि दांपत्य जीवन में परस्पर सम्मान, विश्वास और समझ ही सफल और सुखी दांपत्य जीवन का आधार है।

7. समसामयिक परिप्रेक्ष्य में राम के व्यवहार की प्रासंगिकता

रामचरित मानस में वर्णित ''रामराज्य'' की अवधारणा एक आदर्श शासन व्यवस्था का प्रतीक है, जिसमें न्याय, समानता, कल्याण और सुशासन के सिद्धांत निहित हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने रामराज्य का वर्णन करते हुए एक ऐसे राज्य की परिकल्पना की है, जहां सभी नागरिक सुखी और संतुष्ट हैं, समाज में धर्म और नैतिकता का पालन होता है, और शासक जनता के कल्याण के प्रति समर्पित है। आज के प्रशासनिक परिदृश्य में, जहां सुशासन, पारदर्शिता, जवाबदेही और जन–केंद्रित नीतियों पर बल दिया जा रहा है, रामराज्य की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक है। रामचरित मानस के उत्तरकांड में रामराज्य का वर्णन निम्न श्लोकों के माध्यम से किया गया है :–

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥1॥

[6] तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अरण्यकाण्ड, श्री रामजी का विलाप, जटायु का प्रसंग, कबन्ध उद्धार), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204

चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं॥

राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी॥2॥[7]

इन श्लोकों में कहा गया है कि रामराज्य में कोई भी व्यक्ति शारीरिक, दैविक या भौतिक ताप (कष्ट) से पीड़ित नहीं है। सभी लोग परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में वर्णित नीतियों का पालन करते हुए अपने–अपने धर्म का निर्वहन करते हैं। समाज में धर्म के चारों चरण (सत्य, शौच, दया और दान) पूर्णतः स्थापित हैं और स्वप्न में भी पाप का अस्तित्व नहीं है।

प्रशासनिक दृष्टिकोण से रामराज्य के निम्नलिखित पहलू समकालीन शासन व्यवस्था के लिए अनुकरणीय हैं :–

- **लोककल्याणकारी शासन**

राम के शासन का मूल आधार जनकल्याण था। वे अपने राज्य के प्रत्येक नागरिक के सुख और कल्याण के प्रति सचेत रहते थे और उनकी नीतियां जनहित को ध्यान में रखकर बनाई जाती थीं। रामचरित मानस में वर्णित है –

जासु राज प्रिय, प्रजा दुखारी।

सो नृप अवसि नरक अधिकारी।।

अर्थात, जिस राजा के राज्य में प्रजा दुखी है, वह राजा निश्चित रूप से नरक का अधिकारी है। यह श्लोक राम के शासन दर्शन को स्पष्ट करता है, जिसमें प्रजा का कल्याण सर्वोपरि है। वर्तमान समय में भी, एक सफल प्रशासन की पहचान यही है कि वह जनता के कल्याण के प्रति कितना प्रतिबद्ध है। आज के नीति–निर्माताओं और प्रशासकों के लिए राम का यह दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण सीख है कि सत्ता का वास्तविक उद्देश्य जनसेवा है, न कि सत्ता का उपभोग।

- **न्याय और समानता**

रामराज्य में न्याय और समानता के सिद्धांतों का पालन किया जाता था। राम के न्याय में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं था, और सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त थे। रामचरित मानस में वर्णित स्लोक है –

दंड जतिन्ह कर भेद जहँ, नर्तक नृत्य समाज।

जीतहु मनहि सुनिअ अस, रामचंद्र के राज ॥

अर्थात, जहां दंड (न्याय) का विधान योग्यता के अनुसार होता है, जहां बुद्धिमान राजा शासन करता है, वहीं धर्मराज की स्थापना होती है, और उस राज्य में अन्य किसी की आवश्यकता नहीं होती। आज के न्यायिक और प्रशासनिक तंत्र में, जहां अक्सर न्याय में देरी और भेदभाव की शिकायतें सुनने को मिलती हैं, राम का न्याय दर्शन अत्यंत प्रासंगिक है। सभी नागरिकों को समान अधिकार और न्याय का अधिकार हो, यह आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था का मूल आधार है, और राम ने अपने शासनकाल में इसी सिद्धांत का पालन किया था।

[7] तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (उत्तरकाण्ड, रामराज्य का वर्णन), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204

- **शासक का आदर्श आचरण**

राम न केवल एक उत्कृष्ट शासक थे, बल्कि उनका आचरण भी आदर्श था। वे अपने व्यक्तिगत जीवन में भी मर्यादा और नैतिकता का पालन करते थे, जो उन्हें जनता के बीच सम्मान और विश्वास दिलाता था। जिस प्रकार रामचरित मानस में वर्णित है :–

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।

चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग॥20॥[8]

अर्थात, राम के राज्य में सभी लोग अपने–अपने वर्ण और आश्रम के अनुसार अपने धर्म का पालन करते थे, वेद के मार्ग पर चलते थे, और सुख प्राप्त करते थे। उन्हें न भय था, न शोक, और न ही रोग। आज के शासकों और प्रशासकों के लिए राम का यह आचरण एक महत्वपूर्ण सीख है कि नेतृत्व केवल नियमों और कानूनों से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत आचरण और उदाहरण से भी होता है। जब शासक स्वयं नैतिकता और मर्यादा का पालन करता है, तो समाज में भी ये मूल्य स्थापित होते हैं।

- **पारदर्शिता और जवाबदेही**

रामराज्य में पारदर्शिता और जवाबदेही के सिद्धांतों का पालन किया जाता था। राम अपने शासन के प्रति जनता के प्रति जवाबदेह थे और उनकी नीतियां और निर्णय पारदर्शी थे। उन्होंने अपने शासन में भ्रष्टाचार और अन्याय के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ा था। जिस प्रकार रामचरित मानस में वर्णित है :–

जब ते राम प्रताप खगेसा। उदित भयउ अति प्रबल दिनेसा॥

पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका। बहुतेन्ह सुख बहुतन मन सोका ॥1॥[9]

अर्थात, जब से राम का प्रताप सूर्य के समान उदित हुआ है, तब से सभी राजा पुण्य परायण, बुद्धिमान और धर्म के धारक हो गए हैं। आधुनिक शासन प्रणाली में भी पारदर्शिता और जवाबदेही को सुशासन के अनिवार्य तत्व माना जाता है। सूचना का अधिकार, जन सुनवाई, सोशल ऑडिट जैसे तंत्र इसी दिशा में उठाए गए कदम हैं। राम का शासन दर्शन आज के प्रशासकों को यह सीख देता है कि सत्ता का उपयोग जनहित में पारदर्शी और जवाबदेह तरीके से किया जाना चाहिए। इस प्रकार, प्रशासनिक दृष्टिकोण से रामराज्य की अवधारणा आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक है। यह सुशासन, जनकल्याण, न्याय, समानता, पारदर्शिता और जवाबदेही के सिद्धांतों पर आधारित है, जो आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था के भी आधारभूत तत्व हैं। रामराज्य का अध्ययन और विश्लेषण आज के प्रशासकों और नीति–निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक हो सकता है, जो उन्हें जनहित और कल्याणकारी शासन की दिशा में प्रेरित कर सकता है।

[8] तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अयोध्याकांड, वानरों और निषाद की विदाई), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204
[9] तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (उत्तरकाण्ड, पुत्रोत्पति, अयोध्याजी की रमणीयता, सनकादिका आगमन और संवाद), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204

8. राम के व्यवहार की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

श्रीराम का चरित्र भारतीय संस्कृति में आदर्श आचरण और नैतिक मूल्यों का प्रतीक माना जाता है। उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन वर्तमान समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि वे हमें व्यक्तिगत, सामाजिक और नैतिक स्तर पर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। श्रीराम ने अपने जीवन में मर्यादा, सत्य और धर्म का पालन किया, जो आज के समाज में भी आवश्यक हैं। उन्होंने पिता के वचन का सम्मान करते हुए राज्य का त्याग किया और वनवास स्वीकार किया, जिससे कर्तव्यनिष्ठा और त्याग की महत्ता स्पष्ट होती है। आज के संदर्भ में, जब व्यक्तिगत स्वार्थ और नैतिक पतन की प्रवृत्ति बढ़ रही है, श्रीराम का यह आचरण हमें सिखाता है कि उच्च आदर्शों के लिए त्याग और समर्पण कितना महत्वपूर्ण है। श्रीराम का नेतृत्व कौशल और प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण भी उल्लेखनीय है। उन्होंने वनवास के दौरान वनवासियों, वानरों और भालुओं को संगठित कर रावण के विरुद्ध संघर्ष किया। यह दर्शाता है कि एक सच्चा नेता सभी को साथ लेकर चलने में विश्वास रखता है, चाहे वे किसी भी सामाजिक या आर्थिक वर्ग से हों। आज के समय में, जब समाज में विभाजन और असमानता की समस्याएँ व्याप्त हैं, श्रीराम का यह समावेशी दृष्टिकोण सामाजिक समरसता की दिशा में प्रेरणा प्रदान करता है।[10]

श्रीराम का शबरी के प्रति स्नेह और निषादराज केवट के साथ मित्रता सामाजिक समानता के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। उन्होंने जाति–पांति के भेदभाव को दरकिनार कर सभी के साथ समान व्यवहार किया। यह वर्तमान समाज के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है, जहाँ सामाजिक भेदभाव अभी भी एक चुनौती बना हुआ है। श्रीराम का आचरण हमें सिखाता है कि सच्ची मानवता और प्रेम के लिए सभी को समान दृष्टि से देखना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, श्रीराम का अपने शत्रुओं के प्रति भी सम्मानजनक व्यवहार आज के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। उन्होंने रावण के वध के बाद लक्ष्मण को रावण से ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेजा, जो यह दर्शाता है कि हमें दूसरों की अच्छाइयों से सीखना चाहिए, भले ही वे हमारे विरोधी हों। यह दृष्टिकोण वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक विश्व में सहिष्णुता और विनम्रता का महत्व उजागर करता है। श्रीराम का जीवन हमें यह भी सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में धैर्य और संयम कैसे बनाए रखें। वनवास के दौरान अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी उन्होंने धर्म और सत्य का मार्ग नहीं छोड़ा। आज के समय में, जब लोग तनाव और चुनौतियों से घबराकर गलत रास्तों पर चल पड़ते हैं, श्रीराम का यह आचरण प्रेरणादायक है। अंततः, श्रीराम का जीवन और उनका व्यवहार वर्तमान समय में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके आदर्श हमें नैतिकता, समर्पण, समता, नेतृत्व और धैर्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं, जो एक स्वस्थ और समृद्ध समाज के निर्माण के लिए आवश्यक हैं।

9. निष्कर्ष

श्री राम के चरित्र का मूल स्वरूप उनकी उच्च नैतिकता, धैर्य, करुणा, और आदर्शों की दृढ़ता में परिलक्षित होता है। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुकरणीय आचरण प्रस्तुत किया, चाहे वह पिता के प्रति उनकी आज्ञाकारिता हो, माता–पिता और गुरुजनों के प्रति सम्मान हो, भ्रातृ–प्रेम हो, पत्नी के प्रति आदर्श पतित्व हो, या समाज के प्रति उनका न्यायपूर्ण दृष्टिकोण। उनकी प्रत्येक भूमिका से आज भी समाज को सीखने योग्य प्रेरणा मिलती है। समाज के समकालीन संदर्भ में, श्री राम का चरित्र हमें कर्तव्यनिष्ठा, पारिवारिक मूल्यों, न्यायप्रियता, सहिष्णुता, और लोक–कल्याण की भावना से जुड़ने की प्रेरणा देता है। वर्तमान समय में, जहाँ सामाजिक विघटन, पारिवारिक अस्थिरता, नैतिक ह्रास,

[10] रौनक ''सामाजिक समरसता के प्रतिबिंब रू क्या श्रीराम का जीवन कलियुग में प्रासंगिक है? रामायण केवल आस्था का विषय नहीं'' 2022। https://jantaserishta.com/editorial/reflections-of-social-harmony-is-the-life-of-shri-ram-relevant-in-kali-yuga-ramayana-is-not-just-a-matter-of-faith-1684724?utm_source=chatgpt.com

और स्वार्थपरता बढ़ती जा रही है, वहाँ श्री राम का जीवन–दर्शन पुनः हमारे लिए अनुकरणीय बन जाता है। उनकी आदर्श शासन–व्यवस्था ''रामराज्य'' समानता, न्याय, और कल्याणकारी राज्य का प्रतीक मानी जाती है, जिसकी आज भी प्रासंगिकता बनी हुई है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन में श्री राम के विभिन्न रूपों को विश्लेषण किया गया है, एक पुत्र, एक भाई, एक मित्र, एक राजा और एक पति के रूप में उनके कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को समझने का प्रयास किया गया है। उनका प्रत्येक रूप एक उच्चतम नैतिकता का द्योतक है, जो आधुनिक समाज में नैतिकता एवं सद्गुणों की पुनर्स्थापना के लिए आवश्यक है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, श्री राम के चरित्र की प्रासंगिकता इस बात में निहित है कि वे न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से पूजनीय हैं, बल्कि उनका जीवन–दर्शन एक संतुलित, समृद्ध, और नैतिक समाज की स्थापना के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि श्री राम के जीवन–मूल्य केवल प्राचीन काल तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आज भी समाज में नैतिकता, सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि श्री राम का आदर्श जीवन हमें वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक संघर्षों में संतुलन स्थापित करने की प्रेरणा देता है। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर हम अपने कर्तव्यों को भली–भाँति निभा सकते हैं और समाज में एक सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

शोध ग्रंथ सूची

- तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अयोध्याकांड 165), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204
- तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अयोध्याकांड, श्री राम–कैकेयी संवाद), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204
- तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अयोध्याकांड, श्री राम–भरत संवाद), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204
- तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अयोध्याकांड, श्री सीता–राम संवाद), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204
- तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अयोध्याकांड, श्री सीता–राम संवाद), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204
- तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अरण्यकाण्ड, श्री रामजी का विलाप, जटायु का प्रसंग, कबन्ध उद्धार), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204
- तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (उत्तरकाण्ड, रामराज्य का वर्णन), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204
- तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (अयोध्याकांड, वानरों और निषाद की विदाई), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204
- तुलसीदास, (16वी सेंचुरी), रामचरितमानस, (उत्तरकाण्ड, पुत्रोत्पति, अयोध्याजी की रमणीयता, सनकादिका आगमन और संवाद), गीता प्रेस। https://archive.org/details/ramcharitmanas_202204

- रौनक ''सामाजिक समरसता के प्रतिबिंब रू क्या श्रीराम का जीवन कलियुग में प्रासंगिक है? रामायण केवल आस्था का विषय नहीं'' 2022। https://jantaserishta.com/editorial/reflections-of-social-harmony-is-the-life-of-shri-ram-relevant-in-kali-yuga-ramayana-is-not-just-a-matter-of-faith-1684724?utm_source=chatgpt.com